सांप द्वारा काटे गए लाखों असहाय लोग

भारत डोगरा

भारत की गिनती उन देशों में होती है जहां सर्पदंश से सबसे अधिक लोग प्रभावित होते हैं व इस कारण मौतें भी यहां अत्यधिक होती हैं। पर इस समस्या की उपेक्षा यहां तक है कि प्रामाणिक आंकड़े तक एकत्र नहीं किए जाते हैं व अंग्रेज़ शासन के दिनों में एकत्रित आंकड़ों का उपयोग आज तक हो रहा है। इस विषय के जानकार व्यक्ति मानते हैं कि हर वर्ष सर्पदंश से कम से कम पचास हज़ार मौतें भारत में होती हैं।

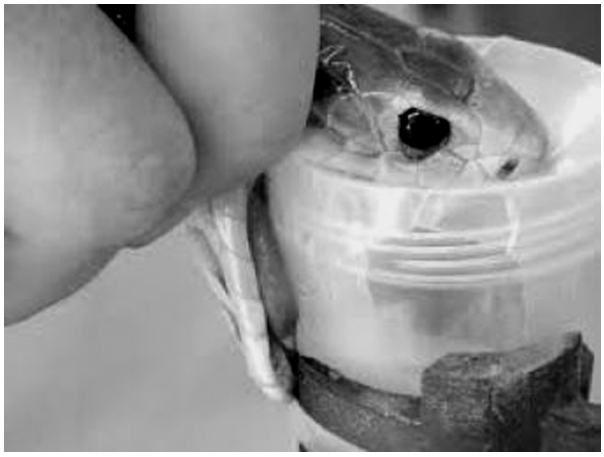

पश्चिम बंगाल में जब अधिक विस्तार से इस बारे में जानकारी एकत्र की गई तो एक ज़िले में एक वर्ष में 1301 मौतें दर्ज़ हुईं। इनमें से अधिकांश मौतें गरीब और मज़दूर-किसान परिवारों में होती हैं और शायद यही कारण है कि यह समस्या उपेक्षित है।

इस उपेक्षा का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष यह है कि सर्पदंश के लिए ज़रूरी दवा एंटी स्नेक वेनम की कमी प्रायः देश में बनी ही रहती है। वैसे सरकारी अस्पतालों में इस दवा की निशुल्क उपलब्धि के निर्देश हैं जो एक बहुत अच्छी बात है। परंतु सवाल यह है कि जब दवा अस्पताल में उपलब्ध ही नहीं होगी तो इलाज कैसे होगा?

इस समय देश में मानसून शबाब पर है व सर्पदंश की सबसे अधिक संभावना वाला समय चल रहा है। अतः इस समय तो अस्पतालों में दवा की उपलब्धि होना बहुत ज़रूरी है। यह गहरी चिंता का विषय है कि इस समय भी अधिकांश सरकारी अस्पतालों में व विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में इस दवा की भारी कमी है।

दूसरी ओर यह भी सच है कि एक समय एंटी स्नेक वेनम के उत्पादन में भारत की उपलब्धियों की चर्चा होती थी। विशेषकर कम लागत के एंटी स्नेक वेनम उत्पादन में भारत को विश्व में विशेष स्थान प्राप्त था। इस उपलब्धि को तब बड़ा आघात लगा जब इस दवा का उत्पादन करने वाले कुछ सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों को भारी विरोध के बावजूद बंद कर दिया गया। बाद में उन्हें फिर से चालू किया गया परंतु इस ज़रूरी दवा का उनका उत्पादन पहले जैसी स्थिति कभी प्राप्त न कर सका।

इस तरह जहां गांवों और ज़रूरतमंदों के लिए सस्ती दवा की उपलब्धि बहुत कम हुई है, वहीं बड़े शहरों में अधिक पैसे देने पर दवा मिल जाती है। इस तरह यह जीवन रक्षक दवा एक मोटे मुनाफे का स्रोत बन रही है।

यह बहुत ज़रूरी है कि एंटी स्नेक वेनम जैसी जीवन रक्षक दवा उचित कीमत पर पूरे देश में सदैव उपलब्ध रहे। इसके लिए सरकार को ज़रूरी कदम शीघ्र से शीघ्र उठाने चाहिए ताकि हज़ारों लोगों का अमूल्य जीवन बचाया जा सके। इसके अलावा देश में इसका समुचित उत्पादन करने की मज़बूत व्यवस्था बनाना भी ज़रूरी है। ***(स्रोत फीचर्स)***

स्रोत के ग्राहक बनें, बनाएं

वार्षिक सदस्यता **व्यक्तिगत 150 रुपए**
संस्थागत 300 रुपए